दर्शन का स्वरूप (B.A I (H)) II paper

विश्व की समस्त अनुभूतियों की बौद्धिक व्याख्या तथा उनके मूल्यांकन के प्रयास को ही दर्शन कहा जा सकता है। दर्शन को अंग्रेजी में Philosophy कहते हैं जो कि ग्रीक शब्द से उठे फिलॉसफिया से निकला अर्थात् बुद्धि से प्रेम। भारत में इसी Philosophy को दर्शन कहा जाता है। दर्शन शब्द 'दृश' धातु से बना है जिसका अर्थ जिसके द्वारा देखा जाये। दर्शन मुख्य अर्थ है जो जगत के मूल तत्व का साक्षात्कार कर सके। भारतीय दार्शनिक केवल बौद्धिक व्याख्या से सन्तुष्ट नहीं होता बल्कि मौलिक तत्व की अनुभूति प्राप्त करना चाहता है।

आदि काल से ही मानव कुछ मौलिक प्रश्नों के समाधान की खोज में तल्लीन है। इनमें कुछ प्रश्न ये हैं कि आत्मा क्या है, विश्व क्या है, ईश्वर क्या है, मनुष्य क्या है इन सबों की उत्पत्ति कैसे हुई? क्या विश्व का कोई प्रयोजन है अथवा प्रयोजन हीन है? इसके अस्तित्व का प्रमाण क्या है? शुभ और अशुभ क्या हैं। इस प्रकार के प्रश्नों के ज्ञान के लिए दर्शन की आवश्यकता होती है। इस प्रकार दर्शन के द्वारा सम्पूर्ण विश्व को समझने और उसकी संगत व्याख्या करने का एक प्रयास है।

भारत में जीवन की समस्याओं के हल करने के लिए दर्शन का सृजन हुआ। जब मानव अपने दुःखों के आवरण से घिरा हुआ पाया तब इससे छुटकारा पाने की कामना की। और दुःखों की निवृत्ति के लिए उसने दर्शन का सहारा लिया। इसलिए प्रो० हिरियन्ना ने कहा है कि "पाश्चात्य दर्शन की भाँति भारतीय दर्शन का आरम्भ आश्चर्य एवं उत्सुकता से न होकर जीवन की नैतिक एवं भौतिक बुराइयों के शमन के निमित्त हुआ था।"

Scanned with CamScanner

दार्शनिक प्रश्नों का मूल उद्देश्य था जीवन के दुःखों का अनुभव करना और तात्विक प्रश्नों का प्रादुर्भाव इसी सिलसिले में हुआ।

भारत में ज्ञान की प्राप्ति ज्ञान के लिए न होकर मोक्षानुभूति के लिए हुई है। मोक्ष का अर्थ है समस्त दुःखों से निवृत्ति। इस अवस्था में समस्त दुःखों का अभाव हो जाता है और व्यक्ति मोक्ष को प्राप्त करता है।

पाश्चात्य दर्शन की उत्पत्ति जिज्ञासा से हुई है किन्तु भारतीय दर्शन की उत्पत्ति दुःखों को दूर करने की आकांक्षा से हुई है। पाश्चात्य दर्शन में इस प्रयोजन का अभाव है किन्तु भारतीय दर्शन का लक्ष्य ज्ञान प्राप्ति के साथ मानव को बन्धन से मुक्त करके मोक्ष दिलाना उल्लेखनीय है। प्रो० मैक्स मूलर के अनुसार पश्चिम में ज्ञान प्राप्त करने के लिए। भारत में दर्शन की खोज मात्र उद्देश्य की प्राप्ति के लिए नहीं, वरन जीवन के परम उद्देश्य की प्राप्ति के लिए किया जाता है।

पाश्चात्य दर्शन का दृष्टिकोण बौद्धिक है किन्तु भारतीय दर्शन आध्यात्मिक है। पाश्चात्य दर्शन में बौद्धिक ज्ञान की प्रधानता है लेकिन भारतीय दर्शन आध्यात्मिक ज्ञान को प्रधानता देता है।

दर्शन विश्व का अध्ययन इसकी समग्रता में करने का एक निष्पक्ष बौद्धिक प्रयास है। दर्शन में विश्व और जीवन की सभी क्षेत्रों की आधारभूत मानव अनुभूति का प्रत्येक क्षेत्र तथा विश्व तत्व का हर पहलू दर्शन के अध्ययन का विषय है कोई भी ऐसा विषय नहीं जो दर्शन के अध्ययन से परे हो।

दर्शन की उत्पत्ति मानव जीवन की कठिन समस्याओं का समाधान प्राप्त करने के लिए होती है। इसकी आधार पर हमें परम तत्व का ज्ञान प्राप्त होता है।